

एक बौद्धिया माणूष



Bangani

एक बौद्धिया माणूष

Bangani
uttarkashi, uttrakhand, india

For permission to reuse, contact the copyright holder.

Big book in Bangani language
Community based Book

प्रकाशण:-
NLCI
बंगाणी मसी समिति समू

दो बात

यह किताब बंगाणी भाषा में बनायी गयी है। इस किताब में एक कहानी है जिसे 10-12 पेजों में बनाया गया है और हर पेज में लगभग 2-3 वाक्य है। इस किताब में हर एक वाक्य के अनुसार चित्र भी डाला गया है। इन चित्रों के आधार से पढ़ने वाला कहानी बता सकता है और पढ़ाने वाला कहानी सुना सकता है। इस पुस्तक का उपयोग साक्षरता कार्यक्रम में किया जाता है। यह किताब बढ़े ही आसान और बहुत ही कम शब्दों में और बहुत सरल रीति से बनायी गयी है। ताकि जो लोग पढ़ने की शुरूआती स्तर में हैं वह आसानी से इस कहानी को अपनी अपनी मातृ-भाषा में पढ़के आसानी से समझ सकें और अपनी मातृ-भाषा में पढ़ने और लिखने का प्रयास कर सकें।

॥धन्यवाद ॥



एक गाउँ दि बिटू नौऊँ रौ आदमी रौयै
थौ। सेउ आपड़े पौरिबार रै साथै खुशी
कौइ रौयै थौ। तेसरी कोइ बी नौकरी ना
नौथि थी।



पर लोग तेसरी इज़त कौरैण थे, केलाइ
सेउ एक सादारण माणूष थौ। औज़ि
सारे लोग तेसरे पौरिबार औज़ि तेसरे
बौद्धिया कामुं ज्ञाणैण थे।



सेउ हर रोज़ रातिकै पार्क दि गुमदै डै
थौ, पार्क दि बौरी ग-दगी औज़ि कुड़ौ
कबाड़ थौ फैला औ-दौ, तेत्कै पेटारै
खेलैण थै। पर साफ सौफाइ बिलकुल
बी ना कौरेण थै।



बीटूइ सुँचौ, कि “ऐ ज़िम्बारी कासरी?”

कुछ लोग तै खाली शिकाइत कौरैण
साफ सौफाइ न कौरदै। लोगु आपड़ी
आदत औज़ि ज़िम्बारी बी बिस्ती गोइ।



तैवै बीटूइ आफुइ सौफाइ कौरनौ शुरु
कियौ। सेउ तेत्कै कौइ रातिकै रोज़
पाकेइ साफ कौरै थौ। लोग तेस देखियौ
एशौ बोलैण थै कि एउ माणूछ आपडौ
बौत्कैइ केलाइ रौ खौराक कौरदै लागी?



ਬੀਟ੍ਰਿ ਲੋਗੁ ਰੀ ਕੁਝੈ ਅਨਸ਼ੁਣੀ ਕੀ । ਔਜ਼ਿ
ਕੁਛੁ ਕੌਤੈ ਬਾਸਿਥੈ ਪੇਟਾਰੈ ਕੀ ਤੇਸਰੀ ਮਦਦ
ਕੌਰਦੈ ਆਨਦੈ ਲਾਗੈ । ਔਜ਼ਿ ਤੇਤਕੈ ਰੈ ਲੋਗੁ
ਤੇਤਕੈ ਕੌਦਲਾਵ ਮੈਸੂਸ



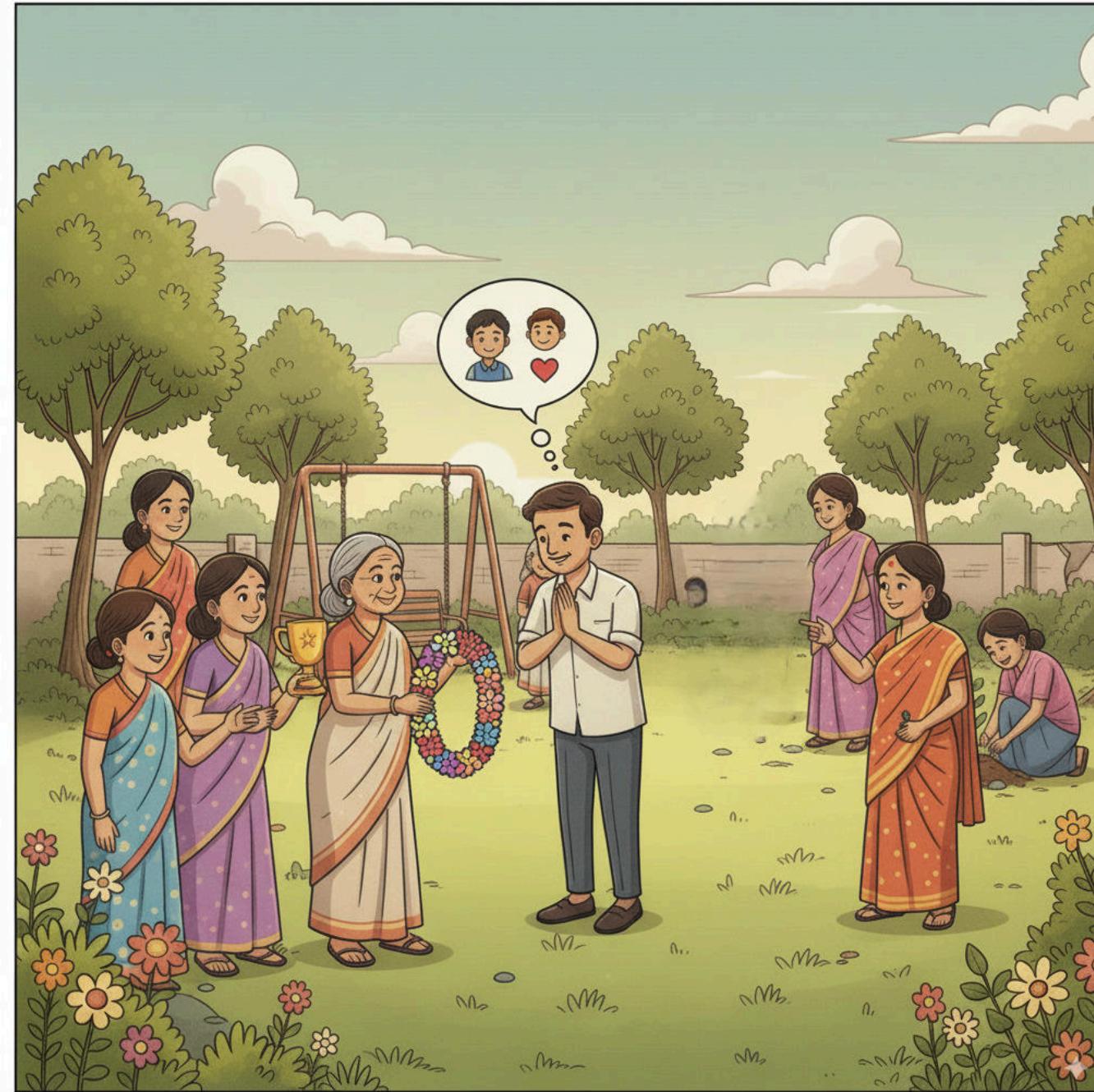
एक बुजुर्ग छेउड़िएइ तेसरी इज़त की
औज़ि बोलौ कि बेटा एउ बौदलाव
तुमारी बौज़े कौइ उवौ । बीटू एशौ
शुणियौ खुश उवौ ।



ਏਕੈ ਤੇਸ ਪਾਰਕ ਦਿ ਫੂਲ ਖਿਲਦੈ ਲਾਗੈ
ਔਜ਼ਿ ਸੇਤ ਪਾਰਕ ਬਿਲਕੁਲ ਸਾਫ ਸੁਥਰਾਈ
ਤਡ ਗੋਓ ਥੈ। ਔਜ਼ਿ ਪੇਟਾਰੈ ਬੀ ਖੁਸ਼ੀ
ਕੌਇ ਖੇਲਾਣ ਥੈ। ਔਜ਼ਿ ਲੋਗੁ ਬੀ ਸੌਫਾਇ
ਕੌਰਣੀ ਸ਼ੁਣੁ ਕੀ।



लोग ऐवै एशौ सौमज़ी गोऐ थै कि छोटौ
काम कौरण कौइ बी बौदलाव औई
सौकै। ज़िन्बारी माणछु महान चाणै,
औज़ि मदद कौरण कौइ पौरिबार औज़ि
गाउँ रै लोग खुश औयैण।



बीटूइ एशौ ना सुँचौ थौ कि लोग तेसरी
तारिफ कौरैण। तिणी तै खाली सेउ काम
एज़ि बौजै कौइ कियौ कि सेउ तेस गाउँ
दि रौयै। पर लोगु तेसरौ आदर कियौ
ओज़ि एक बौड़ौ पुरुस्कार बी देणौ।



एक बियाघके तेसरौ पुरौ पौरिबार पार्क
दि थो बोशौन्दौ। औज़े पेटारै बौड़िया
कौइ खेलदै औज़ि औस्टदै रौयै थै लागी।
बीटू बी बौरी खुश थो।



बीटूइ आपड़े बेटा के बी बौड़िया शिक्षा
देणी औज़ि बोलौ कि बौड़िया माणूछ़
सेउइ औयै। बौदलाव कौरणौ आफुइ
शुरू कौरै।” सौमान, सौफाइ, औज़ि
मदद कौरणौ एज़ि आमारी ज़िम्बारी
औयै।

For the Teacher

This Big Book is designed to be used for two weeks. It promotes enjoyment of storybooks, development of vocabulary, the skills of prediction, sequencing and main idea, and the understanding that books are made up of words.

On **Monday**, the teacher

- shows everyone the cover of the book
- reads the title, while moving a finger under it
- turns to the first page, and discusses the picture (asks the children to predict what will happen)
- reads the text on the first page, fluently (not slowly), and
- asks the children what they think they will see on each page. (The teacher is the only one “reading.”)

On **Tuesday**, the teacher

- shows everyone the book, and
- reads the story again, following the words with a finger, without as much discussion of the pictures.

On **Wednesday**, the teacher

- invites children to join in with “reading” when the story comes to parts which are familiar to them
- shows a flashcard from the story and tells the class what the card says, and
- invites children to find the same word in the storybook (or to match the card with the word in the book to see if it is the same)

On **Thursday**, the teacher

- points smoothly to the words in the story and lets some volunteers “read” a page, if they can remember the story by now, and
- lets the children match the flashcards to the words in the story.

On **Friday**, the children

- act out (dramatize) the story as others help the teacher “read” it.

यह किताब NLCI के द्वारा तैयार की गई है।

हम मात्रभाषा में साक्षरता कार्यक्रम करते हैं। जिसके अन्तर्गत हम अपने क्षेत्र में अलग अलग भागों में शिक्षा देते हैं। जिसमें हमारा उद्देश्य यह है कि, हमारे क्षेत्र के असाक्षर लोग और बच्चे साक्षर हो सकें।

और पढ़ लिख कर अपने समाज का विकास कर सकें।

हम जानते हैं कि हमारे क्षेत्र के अधिकतम लोग बोल-चाल में हो या काम-काज में हर स्थान पर अपनी मात्रभाषा का उपयोग करते हैं। इसलिए हम अपने क्षेत्र के लोगों के लिए जो भी पाठ्य सामग्री तैयार करते हैं। उसे उन्हीं की मात्रभाषा में तैयार करते हैं। जिससे उन्हें पढ़ने और लिखने में आसानी हो और वो जल्दी ही पढ़ना और लिखना सीख सकें।

हम अपनी संस्था में साक्षरता के द्वारा मात्रभाषा में वयस्क शिक्षक ही नहीं चलाते बल्कि, अपने क्षेत्र में पढ़े-लिखे लोगों के लिये तथा बच्चों के लिये भी अलग-अलग तरह की पाठ्य सामग्री भी उन्हीं की मात्रभाषा में उपलब्द कराते हैं। जिससे की बच्चे अपने बचपन से ही अपनी मात्रभाषा को महत्व दें जिससे हमारी भाषा लुप्त ना हो। हम प्रार्थना करते हैं कि हमारे क्षेत्र के सभी लोग पढ़ लिख सकें और हमारे क्षेत्र का और अधिक विकास हो सकें।

,,,,,,,,, धन्यवाद ,,,,,,,

